आलस्य और अलबेलापन - 47

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **पवित्रता का अर्थ ही है-सदा संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क में तीन बिन्दु का महत्व हर समय धारण करना।**

➳ _ ➳ कोई भी ऐसी परिस्थिति आये तो **सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने में स्वयं को सदा पहले ऑफर करो - 'मुझे करना है।** ऐसी ऑफर करने वाले को तीन प्रकार की दुआएं मिलती हैं - **(1)स्वयं को स्वयं की भी दुआएं मिलती हैं, खुशी मिलती है, (2) बाप द्वारा, (3) जो भी श्रेष्ठ आत्मायें ब्राह्मण परिवार की हैं उन्हों के द्वारा भी दुआएं मिलती हैं।**

➳ _ ➳ तो मरना हुआ या पाना हुआ क्या कहेंगे? पाया ना **तो फुल स्टॉप लगाने के पुरुषार्थ को वा कन्ट्रोलिंग पॉवर द्वारा परिवर्तन शक्ति को तीव्र गति से बढ़ाओ।** अलबेलापन नही लाओ - ये तो होता ही है, ये तो चलना ही है. ये अलबेलेपन के संकल्प हैं। **अलबेलापन परिवर्तन कर अलर्ट बन जाओ।**

➢➢ **पवित्रता ब्राह्मण जीवन का फाउंडेशन है।**

➳ _ ➳ पवित्रता यदि है तो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव हो सकता है। अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कम हो रहा है तो इसका अर्थ पवित्रता का फाउंडेशन कमजोर है।

➳ _ ➳ जितनी शक्ति चाहिए उतनी नहीं है ये कहना अर्थात पवित्रता का फाउंडेशन कमजोर है।

➳ _ ➳ जितना सुख का अनुभव होना चाहिए उतना नही हो रहा है अर्थात पवित्रता का फाउंडेशन कमजोर है।

➳ _ ➳ जितना शांति का अनुभव होना चाहिए उतना नही हो रहा है अर्थात पवित्रता का फाउंडेशन कमजोर है।

➳ _ ➳ पवित्रता अर्थात केवल ब्रह्मचर्य नही है।

→ **ब्रह्मचर्य पालन करने वाली आत्मायें भी महान मानी जाती है**

- क्योंकि **असम्भव को सम्भव करती हैं**
- **बापदादा की पदम दुआयें मिलती हैं**

➢➢ **व्रत रखना और धारण करना दोनो ही वृत्ति को परिवर्तन करने के लिए किया जाता है**

➳ _ ➳ ज्ञानी तो बन गए, ज्ञान तो बहुत अच्छा है

➳ _ ➳ योग लगाने की विधि के तो विधाता बन गए हो

➳ _ ➳ धारणाओं की सब्जेक्ट मे इतना अच्छे हो कि इसका बहुत अच्छा वर्णन कर सकते हो

➳ _ ➳ सेवा में भी एक दो से आगे हो

→ उतना और जितना का हिसाब किताब क्यूं

■ सुनना देखना बोलना कर्म करना में व्यर्थ संकल्प है

➳ _ ➳ **व्यर्थ भी समाप्त हो जाए ये है सम्पूर्ण पवित्रता**

➳ _ ➳ **पवित्रता के लिए विधि - कंट्रोलिग पावर हो और फुलस्टाप। कोमा, क्वेश्चन मार्क या विस्मय चिन्ह न लगे बस फुलस्टाप**

➳ _ ➳ मुझे ही मरना है। मुझे ही बदलना है।

→ मरा और स्वर्ग गया

→ **बदलना अर्थात आगे बढना**

➢➢ पवित्रता का अर्थ ही है-सदा संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क में तीन बिन्दु का महत्व हर समय धारण करना

➳ _ ➳ सम्बंध सम्पर्क मे तीन बिंदी लगाना

→ **उनको आत्मा देखना उनको आत्मिक बना देना। लौकिक न लगे अलौकिक बना देना**

→ जो बीत गया सो बीत गया। उसका फिर फिर चिंतन न करना व वहीं रोक देना।

→ उनसे अपेक्षायें न रखना बस प्रेम रिस्पेक्ट देना।

→ अवगुणों कमियों को नही देखना

→ जिन आत्माओं से आलरेडी सम्बंध है उनके प्रति आदर है मान है उनसे उतना ज्यादा दूर रहना चाहिए

■ क्योकि जिनको मानते है उनके नजदीक आने से कमजोरियाँ दिखाई देने लगती है।

■ क्योंकि हम तो समझते थे ये तो बहुत बडे योगी है देखा उनके कमरे मे तो टीवी रखा हुआ है।

■ ये तो बहुत अच्छी योगी आत्मा है व उनकी कोई कमजोरी सामने आ गई तो मन विद्रोह करने लगता है।

➳ _ ➳ **See Father See Mother**

➢➢ जो आफर करता है उनको तीन प्रकार की दुआयें मिलती हैं

➳ _ ➳ स्वयं को सदा पहले आफर करना है।

→ मुझे करना है

→ मुझे बदलना है

➳ _ ➳ स्वयं को स्वयं की दुआयें मिलती हैं तो

→ खुशी मिलती है

■ कोई बुरी आदत छोडते है तो सबसे पहले खुशी होती है

■ **Confidence बढता है**

■ स्वयं को शाबाशी देते है

■ कमजोरियों को जीतते है तो खुशी होती है।

■ होम वर्क मिले व उसे समय पर कर लेते है तो खुशी होती है।

■ ये काम तो किया नही जैसे कामेंट्री लिखना.. एक बार कर लिया तो बहुत मजा आया अच्छा लगा।

→ संतुष्टता होती है

→ योग अच्छा लगेगा

➳ _ ➳ **बाप द्वारा दुआयें प्राप्त करना**

→ **हिम्मत दिखाई साहस दिखाई तो बाप से भी छोटा सा हार तो आ ही जायेगा**

→ अच्छा ही कार्य कर दिया तो ऊपर से पुष्पों की वर्षा हो जायेगी

➳ _ ➳ **परिवार द्वारा दुआयें प्राप्त करना**

→ अनुभव नहीं था फिर भी कर दिया

→ हांजी किया ओबीडीयेंट बना आज्ञाकारी बना अच्छा कार्य किया

→ तो दुआयें स्वतः मिलेगी

➢➢ **मुझे करना है**

➳ _ ➳ **कोई काम मिल जाए उसमें न नही बोलना**

→ बोलने के दो मार्ग है

■ हां बोल दो

■ नही बोल दो

➳ _ ➳ नहीं बोला तो

→ बच गए

→ **बचने के बाद वहीं के वहीं रहेग**

➳ _ ➳ हां बोलना

→ काम अच्छा किया

■ Confidence बढ जायेगा अच्छा कर सकते हैं

■ मजा आयेगा

■ और करने का उमंग आयेगा

→ काम अच्छा नहीं किया

■ **उसमें वो नही रहेगे जो पहले थे क्योंकि अनुभव है**

➳ _ ➳ हां कर दिया तो दोनो तरफ फायदा है।

→ **सीखने के मार्ग बढ जाते है**

→ अनुभव बढ जायेगा

➳ _ ➳ **अनुभव से सींचा गया मन अपना ओरिजिनल साइज रिगेन नही करता**

➢➢ मरना हुआ या पाना हुआ क्या कहेंगे पाया ना।

➳ _ ➳ जो पाया सब अदृश्य है बहुत सूक्ष्म है

➳ _ ➳ दुआयें निकल गई आत्माओ के मुख से

➳ _ ➳ **हमने कुछ अच्छा किया और दूसरो ने देखा दूसरो को प्रेरणा मिली तो दिल से दुआयें निकलेगी**

➳ _ ➳ **दुआयें ही पुरूषार्थ को चलाती है**

→ असंख्य आत्माओं की दुआयें लेनी है।

→ अज्ञानियों की भी दुआयें हमे प्राप्त करनी है।

■ सब आत्माओ की सेवा करनी है।

■ उन्हें जो भी चाहिए वो दे दो ज्ञान के अलावा भी जो चाहिए वो दे।

➳ _ ➳ **अलर्ट बन जाओ सोना नही**

➳ _ ➳ **होश का तीर सदा चुभा रहे**